हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL4**

निर्धारित समय: तीन घंटे ***Time allowed: Three Hours***	*अधिकतम अंक: 250* ***Maximum Marks: 250***

नाम (Name): Ratan Seth Gupta

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 136½

टिप्पणी (Remarks): लिखे गए उत्तर अच्छे हैं। अभ्यास करते रहें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) हरिमुख निरखि निमेख बिसारे।
ता दिन तें मनो भए दिगंबर इन नैनन के तारे।।
घूँघटपट छाँड़े बीथिन महँ अहनिसि अटत उघारे।।
सहज समाधि रूपरुचि इकटक टरत न टक तें टारे।।
सूर, सुमति समुझति, जिय जानति, ऊधो! बचन तिहारे।
करै कहा ये कह्यो न मानत लोचन हठी हमारे।।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत काव्यांश भक्तिकालीन कृष्णकाव्य धारा के सिरमौर कवि सूरदास द्वारा रचित एवं आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा संकलित 'भ्रमरगीत सार' से उद्धृत है।

गोपियाँ, उद्धव के उपदेश का उत्तर देते हुए अपनी विरह दशा का वर्णन करती हैं, वे अपनी आँखों पर स्वयं के नियन्त्रण न होने की व्यञ्जना कर रही हैं।

व्याख्या :-
गोपियाँ कहती हैं कि जब से कृष्ण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मथुरा गये हैं, विरह से उनका बुरा हाल हो गया है। मानो उनके आँखों के तारे दिन में ही वस्त्रहीन हो गये हैं।

वे बिना घूँघट के ही, गलियों के चक्कर लगा रही हैं। कृष्ण के मनमोहक रूप से मानो उन्हें समाधि मिल गई हो, उनकी आँखों ने झपकना ही छोड़ दिया है।

वे कहती हैं कि हे उद्धव! हम आपकी सारी बातें समझती हैं परन्तु हमारे ये हठी नैन कुछ समझने को तैयार ही नहीं हैं।

5½/10

विशेष :-
1. गोपियों की विरहदशा का मार्मिक चित्रण हुआ है।
2. भावा ससम्पूर्ण एवं माधुर्ययुक्त ब्रजभाषा है।
3. अनुप्रास एवं उपमा अलंकारों का सुन्दर प्रयोग दृष्टव्य है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त;
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत काव्यांश महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित प्रसिद्ध लम्बी कविता "राम की शक्ति पूजा" से उद्घृत है।

राम द्वारा, रावण के अधिक शक्तिशाली होने एवं शक्ति के उसके पक्ष में होने के कारण निराशा व्यक्त की जाती है। इस पर जामवन्त, राम का उद्बोधन करते हैं। वे राम को शक्ति की मौलिक कल्पना के माध्यम से उनमें आशा का संचार करते हैं।

भावार्थ :

जामवन्त, राम में आशा का संचार करते हुए कहते हैं कि जब रावण एक पापी होकर भी शक्तिशाली बनकर सभी को त्रस्त कर रहा है, तो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राम आप तो सत्य और न्याय के पक्ष में, आप निश्चय ही उसे हरा सकते हैं।

पुन: राम को शक्ति की मौलिक आराधना का सुझाव देते हुए जामवन्त उसे सिद्धि होने तक युद्ध विराम को कहते हैं।

विशेष :-

(1) यहाँ व्यक्त पंक्तियाँ वस्तुत: निराला के व्यक्तिगत जीवन के संघर्ष एवं स्वाधीनताकालीन परिस्थितियों को भी सांकेतिक रूप में व्यक्त करती हैं।

(2) भाषा तत्समयुक्त किन्तु प्रवाह पूर्ण है।

(3) पंक्तियों में छन्द का आन्तरिक सौन्दर्य बना हुआ है।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) काम-मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल बनाते हो असफल भवधाम।
दुःख की पिछली रजनी बीच विकसिता सुख का नवल प्रभात,
एक परदा यह झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गात।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :

प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावाद के प्रमुख स्तम्भ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कामायनी से उद्धृत है।

प्रस्तुत पंक्तियों में श्रद्धा द्वारा मनु का उद्बोधन करते हुए उन्हें आशावान बनाने का प्रयास किया गया है।

व्याख्या :-

श्रद्धा द्वारा प्रकृति के रहस्य को व्यक्त करते हुए यह कहा जा रहा है कि क्रोध इच्छाओं एवं आशाओं से ही इस प्रकृति की निरन्तरता बनी हुई है। इसको भूलकर प्रकृति की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शक्ति को नकारा नहीं जा सकता है।

श्रद्धा, पुनः कहती है कि प्रत्येक रात्रि के बाद सुबह होती है उसी प्रकार दुःख की पिछली रात से ही सुख रूपी नये सवेरे का उदय हो रहा है। यह एक विचित्र किन्तु सार्वभौमिक सत्य है।

विशेष :-

(1) प्रसाद द्वारा "काम मंगल से मंडित श्रेय" पंक्तियों में अपने कामाध्यात्मवाद दर्शन को प्रकट किया गया है।

(2) भाषा तत्समयुक्त किन्तु प्रवाहपूर्ण है।

(3) उपमा अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है।

6/10

6.4

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) "धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिये सदा ही किया शोध!
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका।"
वह एक और मन रहा राम का जो न थका;

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत काव्यांश महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित प्रसिद्ध लम्बी कविता "राम की शक्ति पूजा" से उद्धृत है।

शक्ति द्वारा अंतिम कमल के उठा लिये जाने से राम की साधना अधूरी रह गई है। राम आत्माधिक्कार की अवस्था में आकर स्वयं को कोस रहे है।

व्याख्या :-

राम आत्माधिक्कार की अवस्था में है, वे अपने सम्पूर्ण जीवन पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए कहते हैं कि उनके सम्पूर्ण जीवन में उन्होंने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विरोध का सामना किया। सदा ही जिन साध्यों का शोध किया, आज वे कभी काम नहीं आये।

राम दुःख से भरकर सीता की मुक्ति न हो पाने से विह्वलता को दबा नहीं पा रहे हैं कि तभी राम का दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्ण मन राम को न थकने की प्रेरणा देता है।

विशेष :-

(1) दी गई पंक्तियों में परिलक्षित आत्मसंघर्ष एवं आत्माधिक्कार तथा पुनः प्रेरित करने वाला मन वस्तुतः निराला के व्यक्तिगत जीवन से भी साम्य रखता है।

(2) भाषा तत्समयुक्त किंतु प्रवाहपूर्ण है।

(3) विराम-चिन्हों का सुन्दर प्रयोग दृष्टव्य है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'राम की शक्ति पूजा' के आधार पर निराला की भक्ति-भावना का विवेचन कीजिये। 20

निराला द्वारा रचित राम की शक्ति पूजा। उनकी भक्तिभावना को भी व्यक्त करता है।

इस लम्बी कविता की संवेदना वस्तुतः संश्लिष्ट है। इसमें निराला के अन्तर्संघर्ष, आजादी के दौरान की परिस्थितियों तथा उनकी भक्तिभावना सभी का समावेश हुआ है।

निराला ने राम को एक सामान्य मानव के रूप में दर्शाया है। जो दुःखी होते हैं विचलित होते हैं और आत्म धिक्कार से भी भरते हैं। निराला के राम, तुलसी के राम की तरह विशिष्ट अलौकिक पुरुष

Copyright – Drishti The Vision Foundation

नहीं बल्कि एक मानव है।

बंगाल की परम्परा से विपरीत निराला ने हनुमान की शक्ति को दुर्गा से अधिक दिखाया है। निराला ने योग क्रिया को महत्व देते हुए एक विशिष्ट पक्ष भी प्रस्तुत किया है।

अपनी भक्ति भावना को प्रकट करते हुए भी निराला अपने आत्मसंघर्ष को सम्पादित करते हुए चलते है और इस दृष्टि से निराला की भक्ति भावना एक उत्कृष्ट रूप धारण करती है।

8/20 गहराई लाएँ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) निराला के आत्मसंघर्ष के परिप्रेक्ष्य में 'राम की शक्तिपूजा' पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

निराला द्वारा रचित 'राम की शक्तिपूजा' वस्तुतः निराला के व्यक्तिगत जीवन से भी सम्बन्धित रही है।

निराला जीवन की विकट से विकट स्थितियों में भी महाप्राण रहे हैं, डटे रहे हैं। विपरीत आर्थिक संघर्ष एवं पत्नी की मृत्यु को उन्होंने देखा है।

राम की शक्तिपूजा के राम भी इसी मनःस्थिति के शिकार हैं :-

धिक जीवन को जो सदा पाता ही आया विरोध
धिक साधन को जिसके लिए सदा ही किया शोध"

परन्तु निराला अपनी विपरीत परिस्थितियों

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वे हार नहीं मानते है, उनका दृढ़ निश्चय एक बार राम की ही तरह उन्हें पुनः उठ खड़ा होने की प्रेरणा देता है।

"जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका
वह एक और मन रहा राम का जो न थका।"

इस प्रकार राम की शक्ति पूजा का आत्मसंघर्ष, निराला के जीवन का भी आत्मसंघर्ष है।

7½/15

थोड़ा और लिखना था

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) "भारत-भारती में निहित नवजागरण चेतना की सीमाओं का उद्घाटन कीजिये। 15

मैथिली शरण गुप्त द्वारा रचित भारत-भारती नवजागरणकालीन श्रेष्ठ रचनाओं में से एक है। गुप्त जी ने सहज भाषा के माध्यम से ऐतिहासिक उपलब्धियों, वर्तमान की समस्याओं एवं स्वर्णिम भविष्य तीनों को प्रभावशाली रूप से व्यक्त किया है।

यद्यपि भारत-भारती की कुछ सीमाएँ भी परिलक्षित होती हैं।

भारत-भारती में राष्ट्रप्रेम पर हिन्दूवादी, उत्तरभारतीय प्रधान, आर्य प्रशंसक होने आरोप लगते हैं। इसके साथ ही इसमें ब्रिटिश शासन की क्रूर आलोचना न होने के कारण इसके वास्तविक उद्देश्य पर भी प्रश्न चिह्न लगाये जाते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह सत्य है कि उपरोक्त आलोचनाएँ निराधार नहीं हैं। भारत-भारती में पिछड़ी एवं दलित जातियों के उद्धार पर कुछ खास प्रकाश नहीं डाला गया है जब कि 1912 के समय यह एक बड़ा मुद्दा रहा है।

इसी प्रकार गुप्त जी ने उत्तर भारतीय प्रतीकों का प्रयोग अधिक कर देशप्रेम एवं नवजागरण को उत्तर भारतीय प्रधान बना दिया है।

भारत के इतिहास में मुस्लिमों की भूमिका पर भी आरोप लगाये जाते हैं। यद्यपि इन सीमाओं को इस प्रकार देखा जा सकता है कि संभवतः ब्रिटिश सत्ता द्वारा प्रतिबंध न लगाये जाने को देखते हुए उनकी कई

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आयोजना न की गई हो। साथ ही कई प्रसंगों में सभी को साथ चलने की प्रेरणा दी गई है। अतः अपनी सीमाओं के साथ भी यह एक उत्कृष्ट काव्य है।

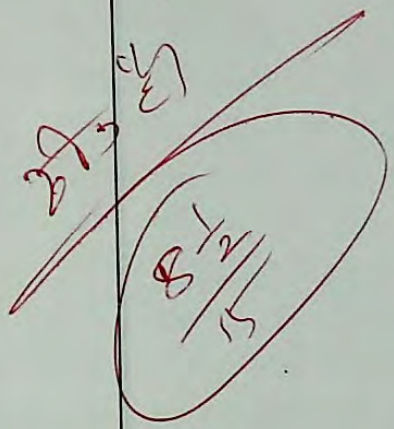

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजियेः 10 × 5 = 50

(क) केवल नाराज़ ही नहीं, लड़ता था बाकायदा हमसे कि आप से पढ़े लिखे लोग खाली तमाशबीन ही बनकर बैठे रहेंगे तो इन गरीबों की लड़ाई कौन लड़ेगा? जहाँ दिन-दहाड़े इतना जुलुम होता हो, वहाँ कोई कैसे अलग-थलग बैठकर खाली कागज पोतता रह सकता है।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यांश प्रसिद्ध राजनीतिक उपन्यास महाभोज से उद्धृत है जिसकी लेखिका मन्नू भण्डारी जी है।

एस.पी. सक्सेना द्वारा बिसू की मौत के सम्बन्ध में महेश से पूछताछ करने पर उपरोक्त बाते बिसू के संदर्भ में महेश द्वारा कही जा रही है।

व्याख्या :-

महेश बिसू के बारे में मि. सक्सेना को बताता है कि गरीबों के कल्याण एवं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जातिगत असमानता एवं भेदभाव के लिए बिरह के मन में आक्रोश भरा हुआ था।

वह मानता था कि इस जुल्म को खत्म करने के लिए पढ़े-लिखे वर्ग का आगे आना अनिवार्य है। अन्याय के खिलाफ आवाज उठानी ही चाहिए, पढ़ा-लिखा वर्ग तटस्थ नहीं रह सकता है।

विशेष :-

(1) पंक्तियों में पढ़े-लिखे वर्ग को उसके वास्तविक कर्तव्यों का बोध कराने का प्रयत्न किया गया है।

(2) दिनकर ने भी लिखा है
"समर शेष है नहीं पाप का भागी केवल व्याध
जो तटस्थ है समय लिखेगा उनका भी अपराध।"

(3) भाषा सरल, तद्भवयुक्त एवं प्रभावपूर्ण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रक्खा है, इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनि है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यांश छायावाद के प्रमुख स्तम्भ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित प्रसिद्ध नाटक स्कन्दगुप्त से लिया गया है।

इन पंक्तियों में देवसेना द्वारा प्रकृति की समरसता एवं इसके प्रत्येक कार्य में विद्यमान लय को दर्शाया गया है।

व्याख्या :-

देवसेना प्रकृति की लयबद्धता को व्यक्त करते हुए कहती है कि प्रकृति का प्रत्येक तत्व समतापूर्ण एवं लयबद्ध है।

वस्तुतः यह मानव ही है जो प्रकृति के लय के साथ नहीं चल पाता है, उसे अपने ज्ञान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रदर्शित करने में ज्यादा आनंद मिलता है परन्तु इससे न तो वह विश्व-वीणा के स्वर को सुन सकता है न पक्षियों के कलरव में प्रकृति की ध्वनि को।

विशेष :-

(1) प्रसाद ने अपनी रचनाओं में विभिन्न सिद्धान्तों का प्रयोग किया है। यहाँ परमाणुवाद सिद्धान्त का संश्लिष्ट प्रक्षेपण दृष्टव्य है।

(2) प्रसाद की ज्ञान, इच्छा और क्रिया की समरसता इन पंक्तियों में भी दिखाई देती है जो कामायनी का मूल उत्स रहा है।

(3) भाषा तत्सम प्रधान, किंतु प्रवाहयुक्त है।

(4) नाद सौन्दर्य का गद्य में अनुपम प्रयोग देखा जा सकता है - कल-कल, छल-छल

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हा! भारतवर्ष को ऐसी मोह निद्रा ने घेरा है कि अब इस के उठने की आशा नहीं। सच है, जो जान-बूझकर सोता है उसे कौन जगा सकेगा? हा दैव! तेरे विचित्र चरित्र हैं, जो कल राज करता था वह आज जूते में टाँका उधार लगवाता है।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यांश आधुनिक हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित प्रसिद्ध नाटक भारत दुर्दशा से लिया गया है।

यह पंक्तियाँ नाटक के अंतिम एवं छठे अंक से ली गई है जहाँ सहायक भारत दैव, नायक भारत को उठाने का असफल प्रयास कर रहा है।

व्याख्या :-

भारतवर्ष गहरी मोहनिद्रा में सो रहा है। उसको जगाने के सारे प्रयास विफल हो गये हैं। ऐसा लगता है कि भारत जानबूझ कर ही

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सो रहा है। इस प्रकार सोने वाले को कौन उठा सकता है।

प्रकृति की लीला भी बड़ी विचित्र है जो भारत कल तक राज करता था, आज उसकी दशा कितनी दयनीय हो गई है।

विशेष :-

(1) भारतेन्दु ने नवजागरण कालीन साहित्य के माध्यम से भारतीयों को अतीत की मोहनिद्रा से जगाने का प्रयास किया है।

(2) भाषा तदभवयुक्त एवं प्रवाहपूर्ण है।

(3) विराम चिन्हों का कुशल प्रयोग द्रष्टव्य है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) ऐसा आतंक आपने कहीं देखा नहीं होगा, साहब! लोगों के घर, ज़मीन और गाय-बैल ही रेहन नहीं रखे हुए हैं जोरावर और सरपंच के यहाँ, उनकी आवाज़ और जबान तक बंधक रखी हुई है। कोई चूँ तक नहीं कर सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ नवलेखन के दौर की प्रमिद्ध लेखिका मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित बहुचर्चित राजनीतिक उपन्यास महाभोज से ली गई है।

एस.पी. सक्सेना द्वारा बिल्लू की मृत्यु के सम्बन्ध में उसके मित्र बिन्दा से पूछताछ की जा रही है। बिंदा गांव में विद्यमान आतंक एवं जोरावर के सम्बन्ध में उपरोक्त बात कह रहा है।

व्याख्या :-

बिन्दा, गाँव में विद्यमान गुण्डागर्दी और आतंक के माहौल को बेरवोफ एस.पी. सक्सेना को बताता है। वह कहता है कि लोगों की भौतिक सम्पत्तियाँ ही नहीं बल्कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उनकी आवाज उठाने एवं बोलने की स्वतन्त्रता तक बंधक बना ली गई है।

गांव में सरपंच और जोरावर का दबदबा है और कोई भी उनके खिलाफ कुछ नहीं बोल सकता है।

विशेष :-

1. इन पंक्तियों में लोकतांत्रिक भारत में सत्तातंत्र का विरूप चेहरा उजागर किया गया है।

2. राजनीति की विद्रूपताओं एवं लोकतंत्र का मखौल उड़ाती ये पंक्तियाँ गांवों में जातीय भेदभाव को उजागर करती है।

3. भाषा तद्भवयुक्त एवं सरस है।

6/16

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) यह तुम नहीं, तुम्हारा स्वार्थ बोल रहा है। स्वार्थ को इतनी छूट देना ठीक नहीं कि वह विवेक को ही खा जाए। अखबारों को तो आज़ाद रहना ही चाहिए। वे ही तो हमारे कामों का, हमारी बातों का असली दर्पण होते हैं। मेरा तो उसूल है कि दर्पण को धुंधला मत होने दो। हाँ, अपनी छवि देखने का साहस होना चाहिए आदमी में।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत पंक्तियाँ नवलेखन के दौर की प्रसिद्ध लेखिका मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित बहुचर्चित राजनीतिक उपन्यास महाभोज से ली गई है।

बिसू की मृत्यु के समाचार को मशाल पत्रिका द्वारा उठाये जाने के प्रश्न पर लखन, दा साहब से अपना रोष व्यक्त करता है, इस पर दा साहब उसे समझाते हुए दी गई पंक्तियाँ कह रहे हैं।

व्याख्या :-

दा साहब, लखन को समझाते हुए कहते हैं कि उसे स्वार्थी होने से बचना चाहिए। अखबारों को छूट मिलनी चाहिए जिससे कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

वे राजनीतिज्ञों के उचित-अनुचित कार्यों को विश्लेषित कर सके उन्हें सही मार्ग दिखा सके।

आणे दा साहब अपनी चिर-परिचित शैली में कहते है कि व्यक्ति को अपने कर्तव्यों के प्रति उत्तरदायी होने का साहस रखना चाहिए।

विशेष :-

(1) दी गई पंक्तियाँ वस्तुतः व्यंग्य है क्यों कि दा साहब जैसा कह रहे है वैसा वे बिल्कुल नही सोचते और न करते है।

(2) भाषा तद्भवयुक्त एवं सरस है।

(3) सूत्र शैली "यह तुम नही, तुम्हारा स्वार्थ बोल रहा है।" स्वार्थ को इतना... ...खा जाये। का सुन्दर प्रयोग द्रष्टव्य है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) "लेखक ने कला के अनुराग से काल्पनिक चित्र में ऐतिहासिक वातावरण के आधार पर यथार्थ का रंग देने का प्रयास किया है।" -दिव्या के संबंध में अपनी इस स्वीकारोक्ति के निर्वाह में यशपाल कहाँ तक सफल हो गए हैं? युक्तियुक्त उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'दिव्या' के सम्बन्ध में यह प्रश्न कई बार उठाया जाता है कि यहाँ इतिहास एवं कल्पना में क्या सत्य है? यशपाल किस सीमा तक यथार्थ के रंग देने में सफल रहे हैं?

यशपाल ने दिव्या के प्राक्कथन में यह स्पष्ट कर दिया है कि दिव्या इतिहास नहीं ऐतिहासिक कल्पना मात्र है और लेखक ने कल्पना के रंगों से इसे ऐतिहासिक आवरण से यथार्थ की ओर लाने का प्रयास किया है।

दिव्या में ऐतिहासिकता को देखा जाये तो सिर्फ तीन चरित्रों पुष्यमित्र, मिलिन्द एवं पतंजलि का उल्लेख हुआ है जो कि ऐतिहासिक है परन्तु ये तीनों ही स्थित चरित्र ही हैं।

तीन ऐतिहासिक नगरों मथुरा, काश्मीर एवं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सागल की कल्पना भी इतिहास सम्मत है। मथुरा तत्कालीन बौद्ध परिवेश में यद्यपि इतना प्रसिद्ध नहीं था फिर भी ज्ञान, कला के केंद्र में प्रमुख था। इसी प्रकार सागल को सियालकोट के रूप में देखा जाता है।

बौद्धकालीन परिवेश में दासों की उपस्थिति एवं स्थिति को लेकर संदेह बना हुआ है परन्तु वर्ण व्यवस्था तत्कालीन समाज का अभिन्न अंग थी।

परन्तु इसके अतिरिक्त दिव्या के अन्य सभी प्रमुख पात्र यथा दिव्या, पृथुसेन एवं सभी प्रमुख एवं अधिकांश घटनाएँ लेखक की कल्पना के उपज हैं।

लेखक ने तत्कालीन परिवेश को आधार बनाकर तत्समयुक्त भाषा शैली यथा निष्क, श्रेण्णी, महाबलाधिकृत इत्यादि का उपयोग कल्पना को यथार्थ की ओर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लाने के रूप में किया है।

ऐतिहासिक आवरण का सहारा तभी तक लिया गया है जहाँ तक यह रचना के काल विशेष को होने को दर्शाता है। पाठक को तत्कालीन भाषा-शैली, प्रथाएँ इत्यादि से परिचित कराते हुए वस्तुतः यह आज की समस्याओं पर विचार करता है।

नारी समस्या, दलितों की समस्या, समाज में ऊँच-नीच, भेदभाव को यह रचना वर्तमान के संदर्भ में प्रस्तुत करती है। दिव्या की स्थिति के माध्यम से नारियों की दयनीय स्थिति एवं समाज में दलितों के साथ होने वाले अन्याय को भी वर्तमान के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है।

वस्तुतः यशपाल ने ऐतिहासिक आवरण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अवश्य लिया है परन्तु कल्पना के रंगों के साथ स्थान को वर्तमान से जोड़ने में प्रभावी रूप से सफल रहे हैं।

12/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नायकत्व की दृष्टि से 'मैला आँचल' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मैला आँचल एक आंचलिक उपन्यास है। फणीश्वरनाथ रेणु ने इस उपन्यास के प्राक्कथन में ही इसे एक आंचलिक उपन्यास बताते हुए इसे पिछड़े हुए गांवों का एक प्रतीक के रूप में चित्रित किया है।

आंचलिक उपन्यास की यह विशेषता होती है कि यहाँ नायक कोई विशेष चरित्र नहीं बल्कि सम्पूर्ण अंचल ही होता है। इस दृष्टि से मैला आंचल के नायकत्व में मेरीगंज की सम्पूर्ण भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विशेषताओं की मात्रा एवं गुणवत्ता का विश्लेषण अनिवार्य है।

मैला आंचल में भौगोलिक विवरणों की भरमार है। उपन्यास की शुरूवात ही "यह है मेरीगंज, कोशी के.... " शब्दों से होती है। विस्तारपूर्वक मेरीगंज के विभिन्न भौगोलिक विशेषताओं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को दर्शाया गया है।

सांस्कृतिक विवरण के तहत उपन्यास के हर दूसरे पृष्ठ पर लोकगीतों की उपस्थिति, भऊजिया के गीत, जाट-जटिन का खेल इत्यादि का विवरण सहजता से देखा जा सकता है।

अंचल की आर्थिक एवं राजनीतिक विशेषताओं को भी पर्याप्तता से उकेरा गया है। गरीबी एवं जहालत को अंचल की मुख्य समस्या के रूप में जगह दी गई है।

स्वतन्त्र होते भारत के साथ बदलते राजनीतिक परिदृश्य एवं दलगत चरित्र को भी पर्याप्त समय दिया गया है।

वस्तुतः उपन्यास का कोई भी चरित्र यथा बांवनदास, डा. प्रशान्त, एवं कालीचरण इतना प्रभावी नहीं रहा है कि वह इसका

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नायक बन सके।

बांवनदास अपने सिद्धान्तों के साथ लड़ते हुए मृत्यु को प्राप्त होता है, कालीचरण उपन्यास के अन्त तक नायक ही हो जाता है तो वही ग. प्रश्न स्वयं ही यह स्वीकार करता है। की वह "कुछ ही चेहरों पर मुस्कान ला सके" तो वह संतुष्ट होगा।

वस्तुतः एक आंचलिक उपन्यास की दृष्टि से नायकत्व के रूप में अंचल का सफल चित्रण रेणु द्वारा किया गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'मैला आंचल' के नामकरण पर विचार करें। क्या आप इस उपन्यास का इससे बेहतर नाम सुझा सकते हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एक आंचलिक उपन्यास की दृष्टि से "मैला आंचल" फणीश्वर नाथ रेणु की अत्यन्त प्रसिद्ध रचना है।

'मैला आंचल' के नामकरण के प्रश्न पर यह विवेचन महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या यह रचना सम्पूर्ण कथ्य को व्यक्त करती है? यदि दूसरा नाम सोचा जाये तो वह क्या हो सकता है?

रेणु ने स्वयं लिखा है कि "इसमें फूल भी है, शूल भी है .... मैं किसी से दामन बचाकर नहीं निकल पाया।" वस्तुतः मैला आंचल, उस अंचल के सम्पूर्ण भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विशेषताओं को व्यक्त करता हुआ शब्द है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह भारत माँ के उस आंचल को व्यक्त करता है जो आज अपनी गरीबी एवं जहालत से मैला हो चुका है। यहाँ यह प्रतीक भी सम्मिलित है कि देश की स्वतन्त्रता के साथ ऐसी अनेक चुनौतियाँ यथा जातिवाद, जमींदारी उन्मूलन, कृषिभूमि का समुचित वितरण, गरीबी भुखमरी एवं अंधविश्वास का अंत जिससे निपटकर ही भारत माँ के आँचल को सुवासित किया जा सकता है।

यदि कोई अन्य नाम सोचा जाये यथा 'मेरीगंज' या फिर कोई चरित्र मूलक नाम यथा डा. प्रशान्त, कालीचरण तो यह रचना के मूल उत्स के साथ मेल नहीं खाता है। यद्यपि मेरीगंज नाम कुछ सही जरूर लगता है परन्तु यह उतना प्रभावी कभी नहीं दिखता है जितना कि मैला आंचल।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सारांशतः रेणु के मैलाआंचल का नामकरण सभी प्रमुख विशेषताओं को देखकर किया है जो ठीक ही है।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) आपके मत से हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास कौन-सा है और क्यों? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी में आंचलिक उपन्यासों की परम्परा में अनेक उपन्यास लिखे गये हैं। शिवपूजन सहाय से लेकर फणीश्वरनाथ रेणु, रांगेय राघव कृष्णा सोबती एवं मैत्रेयी पुष्पा ने अनेक आंचलिक उपन्यास लिखे हैं।

यदि प्रमुख उपन्यासों की चर्चा करें तो फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित मैला आंचल, परती परिकथा, रांगेय राघव की कब तक पुकारूँ तथा मुक्तांचल की आधा गांव जैसी रचनाएँ उभरती हैं।

फणीश्वर जी द्वारा लिखित मैला आंचल आंचलिक उपन्यासों की सभी विशेषताओं को ग्रहण करती है। एक आंचलिक उपन्यास की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह होती है कि अंचल ही इसका नायक होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस अंचल की भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विशेषताओं का ऐसा विवरण प्रस्तुत किया जाता है कि अंचल पाठक के सामने सजीव रूप में उठ खड़ा होता है।

मैला आंचल में भौगोलिक विवरणों की पर्याप्तता पाठक को मेरीगंज से बखूबी वाकिफ करा देती है। उपन्यास की शुरुआत ही "यह है मेरी..... " के विवरण से होती है।

भाषा-शैली का अद्भुत प्रयोग इसकी अन्यतम विशेषता है। गमकना, कनिया, जैसे देशजशब्दों का प्रयोग तो वहीं अंग्रेजी व संस्कृत के शब्दों का देशीकरण यथा भैसचैरमन (वाइस चेयरमैन) ने आंचलिकता की अनुपम छटा बिखेर दी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाषा शैली की यह विशेषता अन्य आंचलिक उपन्यासों इस स्तर पर इतने मौलिक रूप में नहीं दिखाई देती है।

सांस्कृतिक विवरणों की दृष्टि से भी यह उपन्यास विशिष्ट है। भओजिया के गीत, जाट-जट्टिन का खेल एवं लोकगीत जैसे कि

"याद आवे है तोहरी प्यारी सुरतिया
शाले है करेजवा में तीर जी।"

नायक जी हो नायक जी, खोल दा केवड़िया हो नायक जी

इत्यादि ने इस उपन्यास की आंचलिकता के धरातल पर विशिष्टता प्रदान करता है।

इसी प्रकार अंचल की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थितियों पर तटस्थता से रेणु,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रदान किया गया विवरण आंचलिकता के पुट को और भी पुष्ट करता है।

इस प्रकार मैला आंचल में सर्वेक्षण आंचलिक उपन्यास होने के सभी गुण मौजूद हैं।

12/20

Good

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राजनीति और अपराध के आपसी संबंधों की औपन्यासिक प्रस्तुति के रूप में 'महाभोज' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत की राजनीतिक विद्रूपताओं को बेबाकी से परत दर परत उधेड़ता 'महाभोज' एक राजनीतिक उपन्यास के रूप में मन्नू भण्डारी की अति प्रभावशाली रचना है।

दा साहब, सुकुल बाबू, राव एवं चौधरी जैसे चरित्रहीन एवं भ्रष्ट राजनीतिकों की भेंट चढ़ चुका भारत कालांतर उस भीड़तंत्र में बदलने को विवश है जहाँ मनुष्य, वोट के रूप में देखा जाता है।

जोरावर जैसे हत्यारे एवं अपराधी को दा साहब का मुख्यमंत्री के रूप में संरक्षण तथा दत्ता बाबू की आग उगलती 'मशाल' का 'परमिट' के पक्ष में आत्मसमर्पण भारतीय लोकतंत्र की उस स्थिति का द्योतक है जहाँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजनीति एवं अपराध परस्पर पूरक बनते नजर आते हैं।

मन्नू जी ने नाटकीयता के गुणों का उपयोग करते हुए अपनी सधी हुई भाषा शैली के माध्यम से उपन्यास को एक सशक्त दिशा दी है।

उपन्यास का आरम्भ बिसू की मौत के साथ होता है जिसकी लाश को गिद्ध नोच कर खा रहे हैं। वस्तुतः यह लाश भारतीय लोकतंत्र की है जिसकी मृत्यु में राजनीतिज्ञों जैसे कि दा साहब एवं अपराधियों जैसे कि जोरावर की मिलीभगत है।

जहाँ एक ओर भण्डारी जी ने राजनीति एवं अपराध का साठगांठ दिखाया है तो वहीं दूसरी ओर मि. सक्सेना के माध्यम से मध्यम वर्ग का आत्मसंघर्ष एवं व्यक्तिवादता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के माध्यम से समाधान भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

अपनी कसी हुई भाषा शैली, नाटकीय उतार-चढ़ाव युक्त कथानक एवं संवेदनात्मक गहराई के साथ महोमेज में राजनीति एवं अपराध के सांठ-गांठ को प्रभावशाली रूप से व्यक्त किया गया है।

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दिव्या' उपन्यास के नारी-चिन्तन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यशपाल द्वारा रचित दिव्या एक नारी चेतना से ओत-प्रोत उपन्यास है। नारी दृष्टि एवं चेतना को यशपाल ने संवेदनात्मक रूप से उकारा है।

दिव्या एक कुलनारी होती है जो जीवन के दुःखों से परिचित नहीं है। परन्तु उसे अपने निर्णय लेने की स्वतन्त्रता नहीं होती है।

प्रेम का निर्णय दिव्या को जीवन की वास्तविकताओं से परिचित कराता है। उसे दासी के रूप में दासी और फिर नर्तकी के रूप में अंशुमाला बनना पड़ता है।

समय के इस चक्र में दिव्या यह अनुभव करती है कि नारी सबके लिए भोग्य ही है परन्तु यशपाल की नारी दृष्टि भारिश के कथनों के रूप में प्रकट होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नारी

यशपाल के माध्यम से स्पष्ट करते है कि स्त्री प्रकृति नही समाज के विधान से ओण्य है। वे दिखाते है कि स्त्री एवं पुरूष परस्पर एक दूसरे पर आश्रित है।

पुरूष नारी को अपनी वश में इसलिए रखना चाहता है कि जिससे उसका वंश चलता रहे। यशपाल अंतत: यह दिखाने मे सफल रहते है कि नारी को अपने जीवन के निर्णय लेने का अधिकार स्वयं है। इस दृष्टि से दिव्या भगवतीचरण वर्मा की चित्रलेखा तथा सुनीता की सुनीता से आगे निकल जाती है।

संक्षेपत: यशपाल नारी को समतावादी स्थान दिलाने में सफल रहते है।

6½/15

Copyright Drishti The Vision Foundation